RT. HON'BLE SIR ANEROOD JUGNAUTH

Rt. Hon'ble Sir Anerood Jugnauth is the Prime Minister of Mauritius. Born on 29th March 1929, Rt. Hon'ble Sir Anerood Jugnauth was called to the Bar in London in 1954. His illustrious career began with his being elected in the Constituency of Riviere Du Rempart in 1963. He was the President of the Palma Village council in 1964. In 1965, he joined the All Mauritius Hindu Congress. He also attended the London Constitutional Conference on Mauritius in 1965 and was State Minister of Development in the Government of Sir Seewoosagur Ramgoolam in 1965-66 and the Minister of Labour from 1966 to 1967. Being the Leader of Opposition from December 1976 to June 1982, he joined the Movement Militant Mauritian (MMM) in 1980. He founded the Movement Socialist Mauritian party in 1983. He was elected as the Prime Minister in 1982 for the first time, again in 1983, and for the third time from 1991 to 1995. He was promoted to the rank of Knight by Her Majesty, the Queen Elizabeth II of Great Britain in 1980.

Rt. Hon'ble Sir Anerood Jugnauth has been a torch-bearer of democratic aspirations in Mauritius. India and Mauritius share a special relationship. An overwhelming majority of the Mauritian population consists of people of Indian origin. Sir Anerood, right through his public life has been a beacon of their hopes and aspirations. He has been elected Prime Minister of Mauritius on three occasions and has been incessant in the use of his august office to augment the cultural and commercial links between India and Mauritius. The economic initiatives taken by his Government have facilitated the enhancement of FDI in India.

Rt. Hon'ble Sir Anerood Jugnauth is honoured with Pravasi Bharatiya Samman Awards for his continued support to India's causes and concerns and for strengthening India's relationship with Mauritius.

परम माननीय सर अनिरूद्ध जगन्नाथ

परम माननीय सर अनिरूद्ध जगन्नाथ मारीशस के प्रधानमंत्री हैं । 29 मार्च 1929 को जन्मे परम माननीय श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ 1954 में वकालत करने लन्दन गये । इनका यशस्वी करियर 1963 में रिम्येरे डयू रेम्पार्ट चुनाव-क्षेत्र में उनकी विजय के साथ आरंभ हुआ । 1964 में वे पलमा ग्राम परिषद के अध्यक्ष बने । 1965 में वे अखिल मारीशस हिंदु कांग्रेस में शामिल हुए । 1965 में उन्होंने मारीशस पर लंदन संवैधानिक सम्मेलन में भी भाग लिया और वे 1965-66 में सर शिवसागर रामगुलाम की सरकार में विकास राज्य मंत्री तथा 1966-67 में श्रम मंत्री बने । दिसम्बर 1976 से जून 1982 तक विपक्ष का नेता रहते हुए वे 1980 में मूवमेंट मिलिटैन्ट मारीशियन (एम एम एम) में शामिल हो गये । उन्होंने 1983 में मूवमेंट सोसलिष्ट मारीशियन पार्टी की स्थापना की । पहली बार वे 1982 में, फिर 1983 में प्रधान मंत्री बने और तीसरी बार 1991 से 1995 तक प्रधानमंत्री रहे । 1980 में ग्रेट ब्रिटेन की महामान्या महारानी एलिजाबेथ II ने उन्हें नाइट की पदवी दी ।

परम माननीय सर अनिरूद्ध जगन्नाथ मारीशस की प्रजातांत्रिक आकांक्षाओं के प्रकाश-स्तंभ रहे हैं । भारत और मारीशस का विशेष संबंध है । मारीशस की भारी जनसंख्या भारतीय मूल के लोगों की है । अपने सार्वजनिक जीवन के आरंभ से ही सर अनिरूद्ध उनकी आशाओं और आकांक्षाओं के प्रतीक रहे हैं । तीन बार वे मारीशस के प्रधान मंत्री चुने गये और वे भारत और मारीशस के बीच सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संपर्कों को संवर्द्धित करने में अपने सम्मानित पद का लगातार उपयोग करते रहे हैं । उनकी सरकार द्वारा की गयी आर्थिक पहलकदमियों से भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में वृद्धि हुई है ।

परम माननीय अनिरूद्ध जगन्नाथ को भारत की हित-चिन्ताओं का लगातार समर्थन करने और मारीशस के साथ भारत के संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

PROF. FATIMA MEER

Prof. Fatima Meer, was born in Durban, South Africa in 1928. From an early age she took active part in political, social and philanthropic causes, deeply influenced by the Gandhian values and approach. Professor Meer organized concerts to raise funds, in the 1940s and 50s for famine relief in Bengal and took active part in the 1946 Passive Resistance Campaign and the 1956 Treason Trial in South Africa. She opposed vigorously the repressive measures of the apartheid regime, campaigning actively against the Group Areas Act removals in the 50s and 60s and against the Sabotage Act and Detention without Trial in the 50s. She also organized Students and Women's Passive Resistance Committees 1946.

She articulated Gandhian values through multi-media projections. She wrote, choreographed and produced the dance drama 'Ahimsa Ubuntu' in 1995 that was staged in South Africa, Sri Lanka and India and authored the book 'Apprenticeship of a Mahatma' which was made into a full-length film, jointly by India and South Africa based on her own script.

Prof. Meer has been in the forefront for promoting racial integration and harmony, women's cause and education. She founded the Institute for Black Research, Natal, an educational organization devoted to enhance the success rate of African students in the matriculation examination in urban and rural areas of Natal. She is a founder Member of the Federation of South African Women and Director of the Institute for Black Research at the University of Natal. She has championed the cause of universal harmony and understanding and fellowship among religious groups, cultures, communities, ethnic groups, languages and traditions. Her service and devotion to these causes have won her Acharya Kaka Sahib Kalekar Universal Harmony Award.

She is recognized for fostering better understanding abroad of Indian values and her service to the Diaspora in its political, social and economic integration with the community at large in South Africa.

प्रो0 फातिमा मीर

प्रो0 फातिमा मीर का जन्म 1928 में डरबन, दक्षिण अफ्रीका में हुआ था । किशोरावस्था से ही गांधीवादी मूल्यों एंव दृष्टिकोण से गहराई तक प्रभावित होकर वे राजनैतिक, सामाजिक एवं परोपकार के कार्यों में सक्रियतापूर्वक हिस्सा लेने लगीं । बंगाल में पड़े अकाल से राहत के लिए प्रोफेसर मीर ने 1940 एवं 1950 के दशक में धन एकत्र करने के लिए संगीत सम्मेलन आयोजित किए और दक्षिण अफ्रीका में 1946 के सत्याग्रह तथा ट्रीजन ट्रायल में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया । उन्होंने रंगभेदी शासन की दमनात्मक कार्रवाइयों का पुरजोर विरोध किया, 50 एवं 60 के दशकों में ग्रुप एरियाज एक्ट हटाए जाने के विरूद्ध और 50 के दशक के तोड़-फोड़ अधिनियम तथा बिना अभियोजन के निरूद्ध किए जाने के कानूनों के विरूद्ध सक्रियतापूर्वक आंदोलन चलाए। उन्होंने 1946 में विद्यार्थियों एवं महिलाओं की सत्याग्रह समितियां भी संगठित कीं ।

उन्होंने मल्टी मीडिया प्रक्षेपणों के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों को सुस्पष्ट किया । 1995 में उन्होंने अहिंसा उबुन्तु नामक नृत्य नाटिका का लेखन, नृत्य निर्देशन एवं निर्माण किया । इस नृत्य नाटिका का मंचन दक्षिण अफ्रीका, श्री लंका और भारत में किया गया । उन्होंने "एप्रेन्टिसशिप ऑफ ए महात्मा" पुस्तक का लेखन किया इस पुस्तक पर एक संपूर्ण फिल्म भारत और दक्षिण अफ्रीका द्वारा संयुक्त रूप से बनाई गई जिसकी पटकथा उन्होंने ही लिखी थी ।

प्रो0 मीर, नस्लीय एकता और सद्भाव, महिलाओं संबंधी मुद्दों और उनकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अग्रपंक्ति में रही हैं । नटाल के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मैट्रिक परीक्षा में अफ्रीकी विद्यार्थियों की सफलता की दर बढ़ाने के प्रति समर्पित इंस्टीट्यूट फॉर ब्लैक रिसर्च, नटाल नामक एक शैक्षणिक संगठन की स्थापना की । वे दक्षिण अफ्रीकी महिला फेडरेशन की संस्थापक सदस्य तथा नटाल विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट फॉर ब्लैक रिसर्च की निदेशक हैं । उन्होंने धार्मिक समूहों, संस्कृतियों, समुदायों, जातीय समूहों, भाषाओं और परंपराओं के बीच सार्वभौमिक सद्भाव और समझ तथा बंधुत्व के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है । इन सभी क्षेत्रों में उनके द्वारा की गई सेवा और समर्पण भाव के कारण उन्हें आचार्य काका साहेब कालेलकर सार्वभौम सद्भावना पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

उन्हें भारतीय मूल्यों के प्रति विदेश में बेहतर समझ पैदा करने और दक्षिण अफ्रीका में जन सामान्य के साथ भारतीय डायस्पोरा के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक एकीकरण के लिए की गई उनकी सेवाओं के लिए जाना जाता है ।

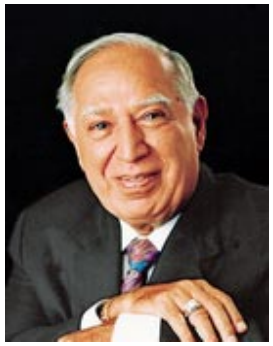

DR. HARI N. HARILELA

Dr. Hari N. Harilela was born in India in 1922 and was brought up in Hong Kong. Through his successful business ventures and community welfare activities, he has been long considered the standard-bearer and the most recognizable symbol of the Indian Diaspora in Hong Kong. He has helped raise the profile of the community through excellent interactions with the Hong Kong community at large, both before and after handover of Hong Kong to China.

Dr. Harilela is the person of Indian origin in Hong Kong to have received both the Order of British Empire and the Gold Bauhinia Star of the Hong Kong SAR. He was also nominated as Member of the Consultative Committee for the Basic Law of the future Hong Kong Special Administrative Region (SAR) in 1985.

Dr. Harilela has a long-time association with India dating back to the 1950s, when he played a key role in arranging the visit to Hong Kong by the first Prime Minister of India, a role he consistently played in subsequent visits of high Indian dignitaries to Hong Kong. Dr. Harilela has investments in Mumbai, Delhi, Bangalore. Harilela family is associated with a number of initiatives to expand cultural and commercial links with India and to promote India as a tourist destination. Dr. Harilela has also undertaken the philanthropic activities in India, the latest instance being his substantial contribution to the relief work in the aftermath of the Gujarat earthquake in 2001.

Dr. Harilela is founder patron of a large number of Indian community organizations abroad. The Harilela family publishes an international magazine for overseas Indians.

Dr. Hari N. Harilela is recognized for his outstanding contribution in the service of the Diaspora and for fostering better understanding abroad of India and its civilization.

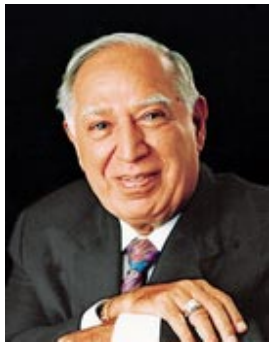

डॉ0 हरी एन. हरीलीला

डा0 हरी एन. हरीलीला का जन्म 1922 में भारत में हुआ और परवरिश हांगकांग में हुई । वे अपने सफल व्यापार उद्यमों और समुदाय के कल्याण कार्यों के द्वारा काफी समय से हांगकांग में भारतीय डायस्पोरा के अग्रणी और अत्यधिक सम्माननीय व्यक्ति माने जाते हैं । चीन को हांगकांग को सौंपें जाने से पहले और बाद में दोनों समय उन्होंने हांगकांग समुदाय के साथ उत्कृष्ट कार्यकलापों के द्वारा भारतीय समुदाय की छवि को निखारने में सहायता की है ।

डा0 हरीलीला आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पॉयर और हांगकांग एस ए आर के गोल्ड बाउहिन्या स्टार दोनों प्राप्त करने वाले हांगकांग में भारतीय मूल के व्यक्ति हैं । उनको 1985 में भावी हांगकांग विशेष प्रशासनिक क्षेत्र (एस ए आर) के बुनियादी कानून से सम्बद्ध परामर्शदात्री समिति का सदस्य भी नामित किया गया था ।

डॉ0 हरीलीला 1950 से भारत से जुड़े हुए हैं, जब उन्होंने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री की हांगकांग की यात्रा के प्रबंध करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी, जो भूमिका वह उसके पश्चात हांगकांग की यात्रा करने वाले भारत के उच्च स्तर के विशिष्ट व्यक्तियों की यात्रा के समय भी निभाते रहे । डॉ0 हरीलीला ने मुम्बई, दिल्ली, बंगलोर में निवेश किया है । हरीलीला परिवार भारत के साथ सांस्कृतिक और वाणिज्यिक सम्पर्कों को विस्तारित करने और भारत को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की कई पहलकदमियों के साथ जुड़ा हुआ है। डॉ0 हरीलीला ने भारत में परोपकार के कार्य भी किए हैं इसका ताजा उदाहरण 2001 में गुजरात में आए भूकम्प के पश्चात राहत कार्यों में उनका पर्याप्त योगदान था ।

डॉ0 हरीलीला विदेश स्थित बड़ी संख्या में भारतीय समुदायिक संगठनों के संस्थापक संरक्षक ह ॅ ।
हरीलीला परिवार प्रवासी भारतीयों के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका प्रकाशित करता है ।

डॉ0 हरी एन. हरीलीला डायस्पोरा की सेवा में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए और भारत तथा उसकी सभ्यता के लिए बेहतर समझबूझ को विकसित करने के लिए जाने जाते हैं ।

SHRI KANAKSI GOKALDAS KHIMJI

Shri Kanaksi Gokaldas Khimji, popularly known as Kanakbhai, hails from an Indian family that had settled down in Oman for several generations. Kanakbhai was born in Oman and had his initial schooling in Mumbai. In 1970 Kanakbhai took over the reigns of the Khimji Ramdas Group of Companies.

The Khimji family is a household name in Oman, both for its extensive business dealings as also for its philanthropic work and role in community related activities. Khimji family has been traditionally close to the ruling family of Oman. The Khimjis have utilized their proximity to the ruling family in the cause of the Diaspora and strengthening links between India and Oman. Kanakbhai played pioneering role in setting up the educational facilities for the Indian in Oman in 1975, when the educational needs of all Indian linguistic groups in Oman was met through his initiative with the establishment of the first ever-English medium Indian school in Muscat. Thanks to the pioneering spirit of Kanakbhai in education, there are now 14 Indian schools in Oman, with 17,000 students pursuing their education. Kanakbhai was also instrumental in getting donation of land and substantial funds from the Ruler of Oman for the Indian school. Kanakbhai also generously contributed to earthquake and drought relief in Gujarat in recent years.

Shri Kanaksi Gokaldas Khimji is recognized for his service to the Indian Diaspora and for his contribution in fostering better understanding of India abroad.

श्री कनकसी गोकलदास खीमजी

कनकभाई के नाम से लोकप्रिय श्री कनकसी गोकलदास खीमजी एक भारतीय परिवार से हैं जो कई पीढ़ियों पूर्व ओमान में बस गया था । कनकभाई का जन्म ओमान में हुआ था और उनकी प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में हुई थी । कनकभाई ने 1970 में खीमजी रामदास ग्रुप ऑफ कंपनीज़ का नियंत्रण अपने हाथ में लिया था ।

अपने व्यापक व्यापार कार्यों तथा साथ ही अपने परोपकारी कार्य और समुदाय संबंधी गतिविधियों में भी योगदान, दोनों के कारण खीमजी परिवार ओमान में घर-घर में जाना जाने वाला नाम है । खीमजी परिवार परंपरागत रूप से ओमान के शासक परिवार के निकट रहता रहा है । खीमजी परिवार ने शासक परिवार के साथ अपनी निकटता का उपयोग डायस्पोरा के हित और भारत और ओमान के बीच संबंधों को सुदृढ़ बनाने के लिए किया है । कनकभाई ने 1975 में ओमान में भारतीयों के लिए शैक्षिक सुविधाएं स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निभाई, यह वह समय था जब ओमान में सभी भारतीय भाषाई समूहों को शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता थी, उनकी पहल से मस्कट में प्रथम अंग्रेजी माध्यम का एक भारतीय स्कूल स्थापित किया गया । शिक्षा के क्षेत्र में कनकभाई की अग्रणी भूमिका को धन्यवाद, अब ओमान में 14 भारतीय स्कूल हैं जिनमें 17,000 विद्यार्थी अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । कनकभाई ने ओमान के शासक से भारतीय स्कूल के लिए भूमि और पर्याप्त धन दान के रूप में प्राप्त करने में भी अहम् भूमिका निभाई । कनकभाई ने हाल के वर्षों में गुजरात में भूकंप और सूखा राहत में भी दिल खोल कर योगदान किया।

श्री कनकसी गोकलदास खीमजी को भारतीय डायसपोरा की सेवा और विदेशों में भारत की बेहतर छवि प्रस्तुत करने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है ।

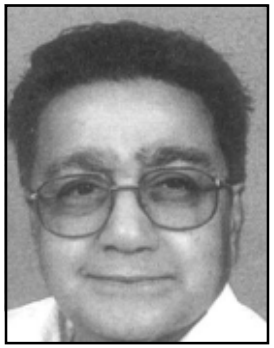

SHRI MANILAL PREMCHAND CHANDARIA

Shri Manilal Premchand Chandaria, popularly known as Manu Chandaria was born in Kenya in 1929 in a family that originally hailed from Champa Beraja village in Jamnagar district of Gujarat. The Chandarias in Kenya, in the time honoured Indian tradition, live in a joint family of nearly 70.

Manu Chandaria has major accomplishments in business with the Chandaria Group of Enterprises, spanning nearly 45 countries across the globe and employing 50,000 people. Shri Chandaria has used his resources to propagate Indian ethos and values. He helped set-up Mahatma Gandhi Memorial Academy Society and Gandhi Smarak Nidhi Fund in Kenya. He is presently Chairman of both these organizations. The Gandhi Memorial Academy Society set up the first ever college of higher learning in Kenya, which later became the University of Nairobi. The Gandhi Smarak Nidhi Fund awards post-graduate scholarship to students of Nairobi University and to under-graduate students from universities all over Kenya.

Shri Chandaria is running charitable institutions in India. He has also made investments in India.

Shri Chandaria has received various international awards including that of Vishwa Gurjari Award (Gujarat), Jawaharlal Nehru Excellence Award, Bharat Gaurav Award by Indian Merchants' Chamber and an award by Government of Republic of Korea for being country's best trading partner in 2001.

Shri Chandaria has been decorated with the Order of the British Empire (OBE) in the Queen's Honours List on the 1st January 2003.

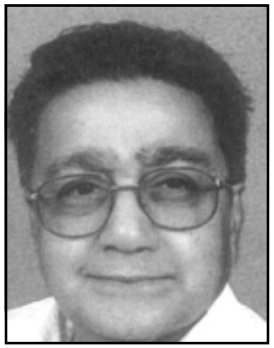

श्री मणिलाल प्रेमचन्द चंदारिया

श्री मणिलाल प्रेमचन्द चन्दारिया जो मनु चदांरिया के नाम से लोकप्रिय हैं, का जन्म 1929 में केन्या के एक ऐसे परिवार में हुआ था जो मूलतः गुजरात के जामनगर जिले के चम्पा बेराजा गांव का है । केन्या में चंदारिया परिवार सदियों से चली आ रही भारतीय परंपराओं के अनुसार लगभग 70 लोगों के संयुक्त परिवार में रहता है।

मनु चंदारिया ने वाणिज्य में बड़ी सफलता प्राप्त की है और उनका चंदारिया उद्योग समूह पूरे विश्व में लगभग 45 देशों में फैला है और इसमें 50000 कर्मचारी काम करते हैं । श्री चंदारिया ने अपने संसाधनों का उपयोग भारतीय परंपराओं और मूल्यों का प्रचार-प्रसार करने के लिए किया है । उन्होंने केन्या में महात्मा गाँधी स्मारक अकादमी समाज और गांधी स्मारक निधि की स्थापना करने में सहयोग दिया । वर्तमान में वे इन दोनों संगठनों के अध्यक्ष हैं । गांधी स्मारक अकादमी समाज ने केन्या में उच्च अध्ययन के लिए पहले कालेज की स्थापना की जो बाद में नैरोबी विश्वविद्यालय बना । गाँधी स्मारक निधि नैरोबी विश्वविद्यालय के छात्रों को स्नात्तकोत्तर और संपूर्ण केन्या के विश्वविद्यालयों के स्नातक-पूर्व छात्रों को छात्रवृत्तियाँ देता है ।

श्री चंदारिया भारत में दातव्य संस्थाएं चला रहे हैं । उन्होंने भारत में निवेश भी किया है ।

श्री चंदारिया को अनेक अंतर्राष्ट्रीय पुस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें विश्व गुर्जरी पुरस्कार, जवाहरलाल नेहरू उत्कृष्टता पुरस्कार, इन्डियन मर्चेन्ट्स चैम्बर द्वारा भारत गौरव पुरस्कार और 2001 में देश का सबसे अच्छा व्यापार भागीदार होने के लिए कोरिया गणराज्य की सरकार से प्राप्त एक सम्मान शामिल है ।

श्री चंदारिया को 1 जनवरी, 2003 को महारानी द्वारा सम्मान पाने वाले लोगों की सूची में आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर (ओ बी ई) से सम्मानित किया गया ।

Lord Navnit Dholakia

In Lord Navnit Dholakia we have a person of Indian Origin who through sheer dint of hardwork has reached a position of eminence in the United Kingdom. Born in March 1937 in Tanzania, Lord Dholakia received his education in Tanzania and India. He went to the United Kingdom and joined Liberal Democrats in 1958. He has been active in public life ever since. He was elevated to the House of Lords and appointed as Baron Dholakia of Waltham Brooks. Lord Dholakia was appointed Deputy Lieutenant for the County of West Sussex in June 1999. He has been honored with the title of the Order of the British Empire.

Lord Dholakia made significant contributions in the fields of community care and issues relating to ethnic unrest. He played an important role in addressing the sensitive issue of racial discontent. He was member of the Race Forum, an advisory group formed by the Home Secretary, UK and held appointments with the Commission for Racial Equality, Police Complaints Authority, Ethnic Minority Advisory Committee of the Judicial Studies Board.

He has been paying close attention to the issues relating to India and has been visiting India regularly. As member of the House of Lords he brought to bear on the debates an element of objectivity on India related issues and helped understand India's concerns. Rising from the ranks of anonymity to a position of pre-eminence in the British political system and in the process enhancing the image of the Diaspora in the UK and addressing in a balanced manner the issues of terrorism and external interference in India, are noteworthy achievements.

Lord Navnit Dholakia is recognized for his service to the Indian Diaspora in general and in the matter of race relations in particular and for objective projection of India's causes and concerns.

लार्ड नवनीत ढोलकिया

लार्ड नवनीत ढोलकिया भारतीय मूल के ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने कड़ी मेहनत से यूनाइटिड किंगडम में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है । मार्च 1937 में तंजानिया में जन्मे लार्ड ढोलकिया ने तंजानिया और भारत में शिक्षा पाई । वह यूनाइटिड किंगडम गए और 1958 में लिबरल डेमोक्रेट्स में शामिल हो गए । वह सार्वजनिक तौर पर सदैव सक्रिय रहे । वह हाउस ऑफ लार्डस तक पहुंचे और आफ बैरन ढोलकिया के रूप में नियुक्त हुए। लार्ड ढोलकिया जून 1999 में काउन्टी ऑफ वेस्ट ससेक्स के डिप्टी लेफ्टिनेंट नियुक्त हुए । उनको आर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर की उपाधी से सम्मानित किया गया ।

लार्ड ढोलकिया ने समुदाय की देखभाल और जातीय असन्तोष से सम्बद्ध मसलों के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया । उन्होंने जातीय असन्तोष से सम्बद्ध संवेदनशील मसलों को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह यूनाइटिड किंगडम के होम सेक्रेटरी द्वारा बनाए गए एक परामर्श दल के जातीय मंच के सदस्य थे और जातीय समता, पुलिस शिकायत प्राधिकरण ज्यूडिशियल स्टडीज बोर्ड की जातीय अल्पसंख्य परामर्श समिति के लिए आयोग के साथ नियुक्तियां करते थे ।

वह भारत से सम्बद्ध मसलों पर अत्यन्त ध्यान देते हैं और नियमित रूप से भारत आते हैं । हाउस आफ लार्ड के सदस्य के रूप में उन्होंने भारत से सम्बद्ध मसलों की वास्तविकता को वाद-विवादों में प्रस्तुत किया और भारत की हित-चिन्ताओं को समझाने में मदद की । गुमनामी से उभरकर ब्रिटिश राजनीतिक प्रणाली में परम-पराकाष्ठा की स्थिति पाना और यू.के. में डायस्पोरा की छवि को विस्तारित करने तथा भारत में आतंकवाद और बाह्य हस्तक्षेप के मसलों को संतुलित तरीके से प्रस्तुत करना उनकी एक उल्लेखनीय उपलब्धि है ।

लार्ड नवनीत ढोलकिया सामान्य रूप से भारतीय डायस्पोरा और विशेषरूप से जातीय सम्बन्धों के मामलों तथा भारत के पक्ष और हित-चिन्ताओं को प्रस्तुत करने के उद्देश्य के लिए दी जाने वाली सेवाओं के लिए जाने जाते हैं ।

SHRI RAJAT GUPTA

Shri Rajat Kumar Gupta is the Managing Director of McKinsey and Company, Inc. Worldwide.

Born in New Delhi in 1948, Shri Rajat Gupta had an excellent academic career topping with a degree in Mechanical Engineering from the Indian Institute of Technology, New Delhi and an MBA from Harvard University. Joining the office of M/s. Mckinsey in New York in 1973, he was assigned the direction of Scandinavian offices in 1982. He joined the Chicago office of McKinsey in 1987, assuming the role of Office Manager there in 1989. He was the first person of Indian origin to become the Chief Executive Officer of the prestigious global corporation at a remarkably young age of 45 years, when he was elected Managing Director of the firm in 1994. He was reelected twice, once in 1997 and again in 2000. In that position, he steered the corporation, based on a decentralized private partnership of 7,000 consultants spread worldwide and spearheaded firm's global expansion. Shri Rajat Gupta's is an exemplary story of a person of Indian origin giving leadership to a global concern, resting on professionalism and management skills.

Over and beyond professional pursuits, Shri Gupta has embarked on work relating to community welfare and social and philanthropic causes. He played a key-role in the establishment of the Indian School of Business at Hyderabad, which aimed at imparting quality management training in India and setting up an Institute of excellence. As a corollary to his achievements, he is associated with internationally renowned educational institutions such as Kellog's School of Management, Massachusetts Institute of Technology, University of Chicago, Harvard Business School, Lauder Institute of Management and International Studies at the Warton School, University of Pennsylvania. He is also the co-chairman of America India Foundation (AIF) and a member of Metropolitan Museum of Art Business Committee.

Shri Gupta played an important role in mobilizing a prominent section of the American leadership to pay objective attention to India's concerns in general and economic issues in particular, including the Gujarat earthquake.

Shri Rajat Gupta is recognized for his contribution in fostering a better understanding of India abroad.

श्री रजत गुप्ता

श्री रजत कुमार गुप्ता मेकिन्सी एण्ड कंपनी इनकारपोरेटिड वर्ल्डवाइड के प्रबंध निदेशक हैं ।

1948 में नई दिल्ली में जन्मे श्री रजत गुप्ता का शैक्षिक जीवन उत्कृष्ट रहा है । उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली से यांत्रिक इंजीनियरी में डिग्री तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय से एम बी ए उपाधि प्राप्त की । 1973 में न्यूयॉर्क में मेसर्स मेकिन्सी के कार्यालय में कार्यग्रहण किया । 1982 में उन्हें स्केन्डेनेवियाई कार्यालयों के निदेशक का कार्य सौंपा गया । 1987 में उन्होंने मेकिन्सी के शिकागो कार्यालय में कार्यग्रहण किया और 1989 में वहीं पर कार्यालय प्रबंधक का पदभार ग्रहण किया । भारतीय मूल के वे ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने 45 वर्ष की युवावस्था में मेकिन्सी का प्रबंध निदेशक चुने जाने पर इस प्रतिष्ठित वैश्विक निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पद संभाला । उन्हें दो बार पुनर्निर्वाचित किया गया एक बार 1997 में और दोबारा 2000 में । इस पद पर रहते हुए उन्होंने इस निगम की अगुवाई, पूरी दुनियां में फैले 7,000 परामर्शकों की विकेन्द्रित वैयक्तिक भागीदारी के आधार पर की और फर्म के विश्वव्यापी प्रसार का नेतृत्व किया । श्री रजत गुप्ता की कहानी, भारतीय मूल के एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने व्यवसायिक और प्रबंधन कौशल का सहारा लेकर एक विश्व स्तरीय कंपनी को नेतृत्व प्रदान किया ।

व्यावसायिक सफलताओं से भी अधिक बढ़कर श्री गुप्ता ने सामुदायिक कल्याण और सामाजिक एवं लोकोपकार के कार्य भी हाथ में लिए । हैदराबाद में भारतीय प्रबंध विद्यापीठ की स्थापना में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई । इस विद्यापीठ का उद्देश्य भारत में गुणवत्तापूर्ण प्रबंध प्रशिक्षण प्रदान करने तथा एक उत्कृष्ट संस्थान की स्थापना का है । उनकी उपलब्धियों के कारण ही उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शैक्षणिक संस्थाओं जैसे कैलोग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, शिकागो विश्वविद्यालय, हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, लॉडर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड इंटर नेशनल स्टडीड, वार्टन स्कूल, पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के साथ जोड़ा गया है । अमेरिका इंडिया फाउन्डेशन (ए एम एफ) के वे सह अध्यक्ष हैं और मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट बिजनेस कमेटी के सदस्य हैं।

श्री गुप्ता ने सामान्य तौर पर भारत के हितों की ओर और खास तौर पर आर्थिक मुद्दों जिनमें गुजरात का भूकंप भी शामिल है, की ओर अमेरिकी नेतृत्व के एक प्रमुख वर्ग का उद्देश्यपरक रूप से ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की ।

श्री रजत गुप्ता को, विदेश में भारत के बारे में बेहतर समझ पैदा करने में योगदान के लिए जाना जाता है ।

SIR SHRIDATH SURENDRANATH RAMPHAL

Sir Shridath Surendranath Ramphal was born in October, 1928 in New Amsterdam to James I Ramphal and Grace Ramphal and had his education in Georgetown, London and at Harvard Law School. After a brilliant legal career, he became Member of National Assembly of Guyana (1965-75). He was Guyana's Minister of State for External Affairs (1967-72), Minister of Foreign Affairs of Justice (1972-1975) and of Justice (1973-1975) and was Secretary General of the Commonwealth (1975-90). Presently he is the Chancellor of the University of West Indies.

Sir Ramphal is a distinguished Jurist having been Solicitor General and Attorney General of Guyana and Member of International Commission of Jurists. Sir Ramphal also held positions of responsibility in international organizations such as Member of Independent Commission on International Development Issues, Independent Commission on Disarmament and Security Issues, Independent Commission of International Humanitarian Issues and World Commission on Environment and Development, Chairman UN Committee for Development Planning and President, World Conservation Union (IUCN). Sir Ramphal through his indefatigable work and distinguished role in various international organizations in general, and the Commonwealth Secretariat in particular has enhanced the image of the Indian Diaspora. Through his prolific writing he has made valuable contributions to the cause of legal studies, political and international affairs, foreign policy, disarmament and security, environment and development, democracy and humanitarian concerns, issues which form part of India's foreign policy concerns. Sir Ramphal's achievements affirm his stature as a person with a global vision and concern for issues affecting the mankind. He is one of the few persons of Indian origin to reach the highest level of positions in diplomacy in his home country and international institutions abroad.

सर श्रीदत्त सुरेन्द्रनाथ रामफल

सर श्रीदत्त सुरेन्द्रनाथ रामफल का जन्म अक्टूबर, 1928 में न्यू एम्सटर्डम में जेम्स आई रामफल और ग्रेस रामफल के यहां हुआ; उन्होंने अपनी शिक्षा जार्जटाउन, लंदन और हार्वर्ड लॉ स्कूल में पूरी की । एक सफल अधिवक्ता के रूप में कार्य करने के बाद वे 1965-75 तक गयाना की राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्य रहे । वे गयाना के विदेश राज्य मंत्री (1967-72) विदेश मंत्री (1972-1975) तथा न्याय मंत्री (1973-1975) रहे । वे राष्ट्रमंडल के महासचिव भी रहे (1975-90) । इस समय वे वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं ।

सर श्रीदत्त सुरेन्द्रनाथ रामफल एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता हैं और गयाना के सॉलीसिटर जनरल तथा अटार्नी जनरल रहने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय विधिवेत्ता आयोग के सदस्य भी रहे हैं। सर रामफल ने अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में जिम्मेदारी के पद संभाले हैं जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय विकास के मुद्दों पर स्वतंत्र आयोग के सदस्य, निरस्त्रीकरण और सुरक्षा संबंधी मामलों पर स्वतंत्र आयोग और विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग के सदस्य, संयुक्त राष्ट्र विकास नियोजन समिति के अध्यक्ष तथा विश्व संरक्षण यूनियन के सभापति का पद । सर रामफल ने आम तौर पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में और खास तौर से राष्ट्रमंडल सचिवालय में अपनी विशिष्ट भूमिका और अथक कार्य के माध्यम से भारतीय डायस्पोरा की छवि निखारी है । अपने प्रचुर लेखन के माध्यम से उन्होंने विधायी अध्ययन, राजनैतिक एवं अंतर्राष्ट्रीय मामलों, विदेश नीति, निरस्त्रीकरण एवं सुरक्षा, पर्यावरण एवं विकास, लोकतंत्र एवं मानवीय चिंताओं, भारतीय विदेश नीति की चिंताओं से जुड़े मुद्दों पर बहुमूल्य योगदान किया है । सर रामफल की उपलब्धियों से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उनके महान व्यक्तित्व की पुष्टि होती है जो कि मानवमात्र को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर चिंतन करता है और जिसके पास एक वैश्विक दृष्टि है । वे भारतीय मूल के कुछ ऐसे व्यक्तियों में से एक हैं जो स्वदेश में राजनय के उच्चतम पदों पर शोभायमान रहने के साथ-साथ विदेशों में भी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में उच्च पदों पर रहे हैं ।

DATO' SERI S. SAMY VELLU

Dato' Seri S. Samy Vellu, a senior Member of the Malaysian Cabinet and Minister of Works of Malaysia since 1995, was born in March 1936.

Dato' Seri Samy Vellu held the port-folios of Deputy Minister of Local Government and Housing (1978-79); Minister for Works (1979-85) and Minister of Energy, Telecommunications & Posts, Malaysia (1989-95). He has been a Member of the House of Representatives of the Malaysian Parliament since 1974.

Dato' Seri Samy Vellu has made remarkable contribution in the service of the Indian Diaspora in Malaysia. He has been the President of the Malaysian-Indian Congress since 1979 and is the founder of Maika Holdings, the investment arm of the Malaysian-Indian Congress. He is the founder and Chairman of Maju Institute of Educational Development, the educational arm of the Malaysian Indian community. Dato' Seri Samy Vellu's leadership of the Indian community in Malaysia has helped strengthen harmonious relations with other ethnic communities of the country and maintain cordial inter-community relations.

Dato' Seri Samy Vellu has been decorated with international awards such as Order of Diplomatic Service Merit (Gwang Hue Medal) by Republic of Korea, Grand Officer of the Order of the Merit of the Republic of Italy and "The Man of the Year Award" (1989) by the International Road Federation of Las Vegas.

Dato' Seri Samy Vellu is recognized for his outstanding contributions in the service of the Indian Diaspora.

दातों सेरी एस.सामी वेलु

मलेशियाई मंत्रिमंडल के वरिष्ठ सदस्य और 1995 से मलेशिया के कार्य मंत्री दातो सेरी एस. सामी वेलु का जन्म मार्च, 1936 में हुआ था ।

दातो सेरी सामी वेलु के पास स्थानीय सरकार तथा गृह के उप मंत्री (1978-79); कार्य मंत्री (1979-85) तथा ऊर्जा मंत्री, दूर संचार एवं डाक, मलेशिया (1989-95) विभाग थे । वह 1974 से मलेशिया की संसद के हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स के सदस्य हैं ।

दातो सेरी सामी वेलु ने मलेशिया में भारतीय डायस्पोरा की सेवा में उल्लेखनीय योगदान दिया है । वह 1979 से मलेशियाई-भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष हैं और मलेशियाई-भारतीय कांग्रेस के निवेशक अंग माइका होल्डिगस के संस्थापक हैं । वह मलेशियाई-भारतीय समुदाय के शैक्षिक अंग माजू इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल डिवलपमेन्ट के प्रवर्त्तक और अध्यक्ष हैं । दातो सेरी सामी वेलु की अध्यक्षता में मलेशिया में भारतीय समुदाय की देश के अन्य जाती समुदायों के साथ हमारे मधुर संबंधों को सुदृढ़ करने और अन्तः सामुदायिक सम्बन्धों को सौहार्द बनाए रखने में सहायता की है ।

दातो सेरी सामी वेलु को कोरिया गणराज्य के आर्डर ऑफ डिप्लोमैटिक सर्विस मेरिट (ग्वांग हू मेडल) इटली गणराज्य के आर्डर ऑफ मेरिट का ग्रैंड आफीसर और लास वेगास के अन्तर्राष्ट्रीय रोड़ फेडरेशन के "द मैन ऑफ द ईयर अवार्ड" (1989) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय एवार्डों से सुशोमित हैं ।

दातो सेरी सामी वेलु भारतीय डायस्पोरा की सेवा में उत्कृष्ट योगदान के लिए जाने जाते हैं ।

SHRI UJJAL DOSANJH

Shri Ujjal Dosanjh, former Premier of British Columbia is a first generation immigrant from Jallandhar, Punjab. Born in India in 1947, Shri Dosanjh made his way to Canada via UK.

In 1991 Shri Dosanjh was elected as Member of Legislative Assembly in the Vancouver Kensington constituency and then as Caucus Chair. He became the Minister for Human Rights, Multiculturalism, Sports and Immigration in 1995 and then was appointed the Attorney General of British Columbia. In a historic development, he was elected as the 33rd Premier and President of the Executive Council of the British Columbia, first for a person of Indian origin in Canada.

As community leader, Shri Dosanjh rose above, parochial interest and hard work to solve problems not only within the Indian community, but in the community at large. While the Sikhs in British Columbia were struggling to find its voice in the volatile politics during the 1970s, he helped in setting up the farm workers legal information service. In the 80s the Sikh community misguided by fundamentalist ideology in British Columbia was virtually split over the assassination of Mrs. Gandhi. Those opposing the fundamentalists were afraid of speaking against violence and militancy. Shri Dosanjh's was the voice and face of moderation and had a calming influence on the volatile politics of the Sikh community in British Columbia. In 1984, he was among the first few in Canada to have denounced the call for Khalistan and its related violence and exhorted the people to follow the voice of sanity and stay aloof from the politics of violence and bloodshed. His political philosophy is a reflection of the age-old Indian approach of conflict resolution through moderation, tolerance and dialogue. With his wit, charm and a certain savoire faire in relationships, he has succeeded in building up a sense of community spirit. With his hard work and a degree of high political astuteness, Shri Dosanjh succeeded in rallying all round support to issues vital for younger generation of Indo-Canadians, ranging from matters of equal opportunity to sexual equality.

Shri Ujjal Dosanjh is recognized for moderating the extremism among the Sikh community in British Columbia and for fostering better understanding abroad of India's age old values.

श्री उज्जल दोसांझ

ब्रिटिश कोलंबिया के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री उज्जल दोसांझ जालंधर, पंजाब से जाने वाले पहली पीढ़ी के आप्रवासी थे । भारत में 1947 में जन्मे श्री दोसांझ यू के के रास्ते कनाडा गये ।

1991 में श्री दोसांझ वैंकूवर केन्सिंग्टन चुनाव क्षेत्र से विधान सभा सदस्य और बाद में कॉसस के अध्यक्ष बने । 1965 में वे मानवाधिकार, बहु-सांस्कृतिकवाद, खेल और आप्रवासन मंत्री बने और फिर उन्हें ब्रिटिश कोलंबिया का महान्यायवादी नियुक्त किया गया । एक ऐतिहासिक घटना में उन्हें 33वाँ प्रधान मंत्री और ब्रिटिश कोलंबिया की कार्यकारी परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया । कनाडा में यह सम्मान पहली बार भारतीय मूल के किसी व्यक्ति को दिया गया ।

समुदाय के नेता के रूप में श्री दोसांझ ने संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर कड़ी मेहनत से न सिर्फ भारतीय समुदाय बल्कि अन्य समुदायों की समस्याओं का भी समाधान किया । 1970 के दशक के दौरान संवेदनशील राजनैतिक माहौल में जब ब्रिटिश कोलंबिया के सिख अपनी आवाज पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे तब उन्होंने खेतिहर मजदूरों के लिए विधिक सूचना सेवा की स्थापना में सहायता दी । 80 के दशक में ब्रिटिश कोलंबिया में कट्टरवादी विचाराधारा से गुमराह होकर सिख समुदाय श्रीमती गांधी की हत्या के पश्चात लगभग बंट गया था । कट्टरपंथियों का विरोध करने वाले हिंसा और उग्रवाद के विरूद्ध आवाज उठाने में डरते थे । श्री दोसांझ संयम की आवाज और चेहरा थे और उन्होंने ब्रिटिश कोलंबिया में सिख समुदाय की संवेदशील राजनीति में शांति लाने का कार्य किया । 1984 में वे कनाडा के गिने-चुने लोगों में थे जिन्होंने खालिस्तान और इससे जुड़ी हिंसा की भर्त्सना की तथा लोगों से अपने विवेक की आवाज को सुनने और हिंसा तथा रक्तपात की राजनीति से अलग रहने का आह्वान किया । उनका राजनैतिक दर्शन संयम, सहिष्णुता और बातचीत से संघर्ष का समाधान करने की भारत की युगों पुरानी नीति को परिलक्षित करता है । अपनी बुद्धि, सौम्यता और संबंधों में व्यवहार कुशलता से वे सामुदायिक भावना का निर्माण करने में सफल हुए । कड़ी मेहनत और उच्च राजनैतिक चतुराई से श्री दोसांझ समान अवसर और लिंग समानता जैसे भारत-कनाडियन युवा पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण मामलों पर चतुर्दिक समर्थन जुटाने में सफल रहे ।

श्री उज्जल दोसांझ को ब्रिटिश कोलंबिया में सिख समुदाय के बीच उग्रवाद को नियंत्रित करने और विदेशों में भारत की युगों पुराने मूल्यों के प्रति बेहतर समझबूझ को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है ।